Points: Yellow = ज्ञान; Pink = योग; Purple = धारणा; Green = सेवा; Red = मुरली से m.imp. Orange = key point

20-03-16 प्रात:मुरली ओम् शान्ति “अव्यक्त-बापदादा” रिवाइज:21-03-81 मधुबन

सच्ची होली कैसे मनायें?

आज बेगमपुर के बादशाह अपने बेगमपुर के मालिकों से मिलने आये हैं। ऐसे मालिकों को देख बापदादा भी खुश हो रहे हैं कि हर बालक मालिक बन गये हैं। संगमयुग बेगमपुर, मूलवतन बेगमपुर, स्वर्ग बेगमपुर, तीनों के मालिक। बापदादा ऐसे मालिकों को देख मालिकों को आज के होली की मुबारक देते हैं। रंग के होली की मुबारक नहीं। लेकिन हो लिए की मुबारक है। सब बाप के हो लिए अर्थात् हो गये। हो लिए ना! गीत क्या गाते हो? बाप के होलिए। जो बाप के हो लिए उन्हों को ही होली मुबारक। होंगे वा हो लिए? क्या कहेंगे? जब होली अर्थात् पास्ट इज़ पास्ट कर बाप के होलिए तब खुशी की पिचकारी लगाते हो। पिचकारी से रंग डालते हैं ना। तो आपकी पिचकारी से कितनी धारायें निकलती हैं? आजकल एक ही पिचकारी से भिन्न-भिन्न रंग भी डालते हैं। वह रंग लगने के बाद बेरंगी हो जाते हैं इसलिए उन्हें वस्त्र वा अपनी सूरत ठीक करना पड़ता है। और आपका रंग इतना श्रेष्ठ और प्रिय है, जो जिसको भी लगाओ वह यही कहेगा कि और लगाओ। सदा लगाओ। आपके खुशी की पिचकारी मनुष्य को कितना परिवर्तन कर देव आत्मा बना देती है। एक धारा – ‘मैं एक श्रेष्ठ आत्मा हूँ’, यह खुशी की धारा है। मैं विश्व के मालिक का बालक हूँ। मैं सृष्टि के आदि मध्य अन्त का नॉलेजफुल हूँ। ऊंचे ते ऊंचे बाप के साथ श्रेष्ठ मंच पर मेरा हीरो पार्ट है। इसी प्रकार कितनी खुशी की प्वाइंटस की धारायें आपकी पिचकरी में हैं। एक तो यह खुशी की पिचकरी एक दो को लगाते हो ना। दूसरी सर्व प्राप्तियों के धाराओं की पिचकारी। जैसे अतीन्द्रिय सुख। आत्मा और परमात्मा के मिलन का रूहानी प्रेम। ऐसे और भी सोचो। यह तो कामन है। तीसरी पिचकारी - सर्व शक्तियों की पिचकारी। इन विदेशियों ने पिचकरी कभी देखी है? जैसे गुलाबाशी होती है उसमें कितने सुराख होते हैं। ऐसे पिचकारी दूर से लगाई जाती है जो फोर्स से दूर-दूर तक जाती है। ज्ञान की अलौकिक पिचकारियाँ तो देखी हैं ना। अच्छा – चौथी पिचकारी ज्ञान की मूल प्वाइंटस। ऐसे पिचकारियों से होली खेलने से देव आत्मा बन जाते हो। गोपी-वल्लभ गोप गोपियों से एक दिन होली नहीं खेलते लेकिन संगमयुग का हर दिन होली डे है। संगम पर होली डे और सतयुग मे होगी हॉली डे। अभी हॉली डे नहीं मनाना है। अभी तो मेहनत ही मुहब्बत के कारण हॉली डे की अनुभूति कराती है। बापदादा ने बच्चों का एक दृश्य ऊपर से देखा। मेहनत का दृश्य देखा। (जहाँ नया हाल बनना है वहाँ भाई लोग रोज़ पत्थर उठाते हैं) कहाँ मन्दिरों में पूजे जाने वाले, प्रकृति भी आपकी दासी बनकर सेवा करने वाली, बाप भी बच्चों की माला सिमरण करते हैं, लेकिन बच्चे क्या कर रहे थे? पत्थर उठा रहे थे। यह मेहनत, मेहनत नहीं लगी मुहब्बत के कारण। समझा हमारा कार्य है, घर का कार्य है। यज्ञ सेवा है। तो बापदादा से मुहब्बत होने के कारण यह मेहनत भी एक खेल लग रहा था ना। संगमयुग की जितनी मेहनत उतनी फ्रीडम है क्योंकि बुद्धि और शरीर जितना बिजी रहते उतना व्यर्थ संकल्पों से फ्री रहते हैं इसलिए कहा कि संगम पर मेहनत ही हॉली डे है। बच्चों को देख बापदादा आपस में रूह-रिहान कर रहे थे। अभी हॉल बनाने के लिए पत्थर उठा रहे हैं, लेकिन यह एक पत्थर हजार गुणा वृद्धि को पाकर हीरे मोती बन जायेंगे। जो आपके महलों में यह हीरे मोती कितनी सजावट करेंगे। वहाँ महल बनाना नहीं पड़ेगा। अभी जो मेहनत की उसका फल सजा सज़ाया महल मिलेगा। बापदादा देख रहे थे - बड़ी खुशी-खुशी से सेवा की लग्न में मगन थे। तो अब समझा होली कौन-सी है!

पहले जलाना है फिर मनाना है। एक दिन जलाते हैं दूसरे दिन मनाते हैं। आप भी एक दिन होली अर्थात् पास्ट इज़ पास्ट करते हो अर्थात् पिछला सब जलाते हो, तब ही फिर गीत गाते हो हम तो बापदादा के होलिए। यह है खुशी में मनाना। यादगार की होली में भी मनाने के दिन देवताओं के रूप साँग के रूप में बनाते हैं। लेकिन उसमें भी विशेष मस्तक पर लाइट जलाते हैं। यह आपका यादगार है। जब मस्तक की ज्योति जगती तो देवता बन जाते हो। बाप के होलिए तो देवता बन जाते हो। आपका है अनुभव और उन्हों का है आपके अनुभव का यादगार मनाना। तो समझा आप लोगों ने होली कैसे मनाई और वह लोग क्या करते हैं! यथार्थ क्या और यादगार क्या! (बड़े-बड़े लोग एक महामूर्ख सम्मेलन भी करते हैं) यह भी राइट है क्योंकि जब बाप आते हैं तो बड़े-बड़े लोग महामूर्ख ही बन जाते हैं, जितने बड़े उतने ही मूर्ख बनते। जो बाप को ही नहीं जान सकते तो महामूर्ख हुए ना। यह भी अपनी कल्प पहले की महामूर्खता की यादगार मनाते हैं। सारा उल्टा कार्य करते हैं। बाप कहते मेरे को जानो वह कहते बाप है ही नहीं। तो उल्टे हुए ना। आप कहते हो बाप आया है, वह कहते

– हो ही नहीं सकता। तो उल्टा कार्य करते हैं ना। ऐसे तो बहुत कुछ विस्तार कर लिया है। लेकिन सार है बाप और बच्चों के मंगल मिलन का यादगार। संगमयुग ही मंगल मिलन का युग है। भारत में रहने वाले बच्चे तो इन बातों को जानते हैं, आज विदेश से आये हुए बच्चों को सुना रहे हैं क्योंकि राज्य तो भारत में ही करना है ना। अमेरिका में तो नहीं करना है। भारत की बातें जरूर सुनेंगे, समझेंगे ना। आपकी बातें क्या बना दी हैं। कितना फर्क कर दिया है।

ऐसे होली सो होली कर होली के गीत गाने वाले, सदा भिन्न-भिन्न पिचकारियों द्वारा आत्मा की चोली रंगने वाले, सदा बाप से मंगल मिलन मनाने वाले ब्राह्मण सो देवता बनने वाले बेगमपुर के मालिकों को बापदादा का याद प्यार और नमस्ते।

मुरलियाँ तो बहुत सुनी हैं। कुछ रहा है सुनने का? अभी तो मिलना और मनाना है। सुनना और सुनाना भी बहुत हो गया। साकार रूप में सुनाया, अव्यक्त रूप में कितना सुनाया, एक वर्ष नहीं लेकिन 13 वर्ष। अभी तेरहवें में तेरा ही होना चाहिए ना। तेरा हूँ, इसी धुन में रहो तो सारा सुनाने का सार आ जायेगा।

कल बच्चों के मनाने का दृश्य भी देखा है। खूब हँसा, खूब खेला। बापदादा मुस्कराते रहे। सदा ही ऐसे हँसते नाचते रहो लेकिन अविनाशी। बापदादा बच्चों को बहलते हुए देख यही वरदान देते कि अविनाशी भव। टांगे तो थक जायेंगी लेकिन बुद्धि से खुशी में नाचते रहो। अव्यक्तवतन वासी बन फरिश्ते की ड्रेस में नाचते रहेंगे तो अविनाशी और निरन्तर कर सकेंगे। यह भी संगमयुग के स्वेहज हैं, फिर नहीं होंगे इसलिए खूब खेलो, खाओ, मौज करो लेकिन अविनाशी शब्द भी याद रखो।

अमेरिका – एक-एक रत्न अनेक आत्माओं के कल्याण के निमित्त बने हुए हैं। आत्माओं को भटकते हुए देख रहम आता है ना। अभी तो और भी ज्यादा दु:ख की हाहाकार बढ़ेगी। ऐसे अनुभव करेंगे जैसे सुख की एक जरा-सी झलक भी नहीं देखाई देती। यह सुख के साधन सब उन्हों को दु:ख के साधन अनुभव होने लगेंगे। ऐसे टाइम पर सिर्फ एक ही बाप और बाप के बच्चों का सहारा उन्हों को दिखाई देगा। सारे देश में अन्धकार के बीच में एक ही लाइट हाउस दिखाई देगा। यह धीरे-धीरे अति में जल्दी-जल्दी जाता रहेगा। तो ऐसे समय पर लाइट और माइट देने के अभ्यासी आत्मायें चाहिए। इसी अभ्यास में रहते हो? एक समय पर तीनों प्रकार की सेवा करनी पड़ेगी। मंसा भी, वाचा भी, कर्मणा भी। कर्मणा से उनको बिठाकर आथत देना। तो ऐसी तैयार करते चलो क्योंकि अमेरिका में जितने ज्यादा वैभव हैं, जितना बड़ा स्थान है, उतना ही बड़ा दु:ख का अनुभव भी करेंगे। तो विनाश की तैयारी चल रही है ना। विनाश के निमित्त आत्माओं के साथ-साथ आप स्थापना करने वाली आत्मायें भी अपना झण्डा बुलन्द करेंगी। तो स्थापना के कार्य में विशेष आत्मा को कौन लायेगा? (अमेरिका) विशेष आत्माओं को लाने से अमेरिका का सेवाकेन्द्र भी वी.आई.पी. हो जायेगा ना।

सैनफ्रांसिसको – जैसा स्थान है, स्थान के अनुसार कौन सा झण्डा लहरायेंगे! साइंस वाले तो और भी जगह हैं। लेकिन यहाँ की विशेषता क्या है? धार्मिक नेतायें बहुत हैं, एक भी धार्मिक नेता को अगर अनुभव करा दिया तो कितना नाम बाला हो जायेगा। तो यह विशेषता दिखाओ। जब वह लोग भी प्रैक्टिकल अनुभव सुनेंगे तो अनुभव के आधार पर आकर्षित होंगे। तो यह नवीनता दिखाओ। कुमारियाँ ऐसे विद्वानों को वाण मारें। यह कल्प पहले की यादगार है ना। तो वह कौन सी कुमारियाँ हैं? आप हो ना। कोई भी निमित्त बनें। ब्रहमाकुमार नजदीक लायेंगे और ब्रहमाकुमारियाँ जीत प्राप्त कर विजय का झण्डा लहरायेंगी। आप ब्रहमाकुमार शिकार को लायेंगे और आप शिकार को अपना बनाकर मरजीवा बना देंगी। पहला कार्य पाण्डवों का है। फल निकालने में थोड़ा समय लगता है, जो बीज डाल रहे हो उसका फल निकलेगा जरूर। प्यार से उन्हों की सेवा करनी है। उन्हों को महान-महान कहते हुए अपनी महानता दिखानी है, अगर पहले उनको कहेंगे आप तो कुछ नहीं हैं, आप रांग कर रहे हैं, तो वह तुम्हारी सुनेंगे भी नहीं इसलिए पहले महिमा करो। जैसे मुरली में सुनते हो ना – चूहा क्या करता है? पहले फूंक देता फिर काटता है, ऐसे करो क्योंकि फिर भी विकारी दुनिया को पिलर्स देकर ठहराने का काम तो किया है ना। तो जो किया है उसकी महिमा तो करेंगे ना। अच्छा-अच्छा कहते, अच्छा बनाते जाओ। तो समझा आपको कौन सा कार्य करना है, यह भी आपके मैसेन्जर बन जायेंगे। इन्हों का आवाज तो बड़ा होता है ना। माइक बड़े होते हैं, इसलिए ऐसे-ऐसे को सम्पर्क में लाओ जिसका नाम अच्छा हो, बड़ा हो।

आप उन्हों द्वारा अपना बड़ा कार्य निकाल सकते हो। ब्राह्मण बढ़ाने की सेवा तो करनी ही है, लेकिन यह है एडीशन। कोई बड़ा प्रोग्राम रखो, उस प्रोग्राम में ऐसे वी.आई.पीज को कोई पोजीशन देकर बुलाने की कोशिश करो। उन्हों को इस कार्य में सहयोगी बनाओ। उनके पास कोई अनुभवी परिवार ले जाओ तो उसके प्रैक्टिकल लाइफ का प्रभाव उन पर जयादा पड़ेगा क्योंकि वह भी प्रूफ देखने चाहते हैं कि यह क्या करते हैं।

अफ्रीका – सेवा की वृद्धि का उमंग-उत्साह तो सदा रहता है ना। जैसे दृष्टान्त देते हैं कि मछली नीर के बिना नहीं रह सकती, वैसे ब्राह्मण सेवा के बिना नहीं रह सकते क्योंकि सेवा करने से एक तो स्व उन्नति और साथ-साथ अनेक आत्माओं की भी उन्नति हो जाती है। तो अपनी उन्नति के कारण भी प्राप्ति होती और दूसरे की जो उन्नति होती उसका भी शेयर जमा हो जाता इसलिए बापदादा सदा कहते ब्राह्मण वह जो याद और सेवा में सदा तत्पर रहे। याद में रहकर सेवा करना अर्थात् मेवा ही मेवा है। जैसे मेहनत मुहब्बत में बदल जाती वैसे सेवा मेवा में बदल जाती। तो ऐसे सेवा का उमंग रहता है? जो जितना करता है उसका पदमगुणा हो जमा हो जाता है। अफ्रीका में भावना वाली सहयोगी आत्मायें हैं। सेवा में सहयोग देने का अच्छा उमंग-उत्साह है। एक-एक रत्न बहुत वैल्युबल और लाडला है।

m.m.m. important

'सी फादर' इस मंत्र को सदा सामने रखते हुए चढ़ती कला में चलते चलो। जब सी फादर और फालो फादर है तो उड़ते रहेंगे, जब आत्मा को फालो करते तो नीचे आ जाते। कभी भी आत्मा को नहीं देखना क्योंकि आत्मायें सब पुरुषार्थी हैं। पुरुषार्थी को फालो करोंगे तो पुरुषार्थी में अच्छाई भी होती और कुछ कमी भी होती है, सम्पन्न नहीं। तो फालो फादर न कि ब्रदर या सिस्टर। जैसे फादर एकरस है तो फालो फादर करने वाले भी एकरस रहेंगे।

भारतवासी बच्चों को देखते हुए बापदादा बोले – फारेनर्स का अपना भाग्य, भारत वालों का अपना भाग्य। भारत वाले भाग्यशाली न बनते तो फारेन वाले कैसे आते। विदेश की महिमा लास्ट सो फास्ट के हिसाब से है लेकिन जो हैं ही आदि में, वह आदि में ही रहेंगे। भारत वालों ने भगवान को अपना बनाया है, और उन्हों को बना बनाया भगवान मिला है। अगर भारतवासी बाप को न पहचानते तो उन्हों को पहचान कौन देता। बाप को प्रत्यक्ष करने के निमित्त तो फिर भी पहले भारत वाले हैं। गुप्त से प्रत्यक्ष पहले भारत वालों ने किया फिर उन्होंने माना। जैसे दुकान खोलते हैं तो पहले रेडी पर या पटरी पर लगाते हैं। फिर वृद्धि होते-होते बड़ी दुकान हो जाती। ऐसे भारत वालों ने पहले बहुत मेहनत की, दुकान खोले तब तो आप लोग आये हो ना, जितना सहन भारत वालों ने किया उतना फारेनर्स ने कहाँ किया है, इसलिए भारतवासी बच्चे इसमें नम्बरवन हैं। जो सहन करने में नम्बरवन हैं उन्हें वर्सा भी उसी हिसाब से मिलता है। आप लोग प्रैक्टिकल चरित्र करने वाले हो और वह सुनने वाले हैं। आप कहेंगे हमने ऑखों से ब्रहमा में शिव बाप को देखा - यही विशेषता है। वैसे तो सब एक दो से आगे हैं क्योंकि ड्रामा अनुसार संगमयुग को ऐसा वरदान मिला हुआ है, जो हरेक में कोई-न-कोई विशेषता सबसे विशेष है। अभी देखो भोली की विशेषता और भाषण करने वालों की विशेषता। अगर भोली न होती तो भी काम नहीं चलता। अच्छा – यह भी होली खेल रहे हैं। आज है ही मनाना। यह भी पिचकारी लग रही है।

point of the day

**

वरदान:- संगमयुग पर एक का सौगुणा प्रत्यक्षफल प्राप्त करने वाले पदमापदम भाग्यशाली भव

संगमयुग ही एक का सौगुणा प्रत्यक्षफल देने वाला है, सिर्फ एक बार संकल्प किया कि मैं बाप का हूँ, मैं मास्टर सर्वशक्तिमान् हूँ तो मायाजीत बनने का, विजयी बनने के नशे का अनुभव होता है। श्रेष्ठ संकल्प करना – यही है बीज और उसका सबसे बड़ा फल है जो स्वयं परमात्मा बाप भी साकार मनुष्य रूप में मिलने आता, इस फल में सब फल आ जाते हैं।

20.3.16

स्लोगन:- सच्चे ब्राह्मण वह हैं जिनकी सूरत और सीरत से प्योरिटी की पर्सनैलिटी वा रॉयल्टी का अनुभव हो।